The Hindu Plus Summary : 24.01.2024

मेन्स मास्टर

मोदी-मैक्रोन के लिए चुनौती!

संदर्भ

1998 में स्थापित भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी की नींव समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास जैसे विविध डोमेन को शामिल करने के लिए विकसित हुई है। यह स्थायी सहयोग अंतरराष्ट्रीय कानून, लोकतांत्रिक मूल्यों और बहुपक्षीय सहयोग के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर जोर देता है। इंडो-पैसिफिक घटक भू-राजनीतिक गतिशीलता को संबोधित करने में भागीदारों के संरेखण का प्रतीक है। यह रिश्ता रणनीतिक पहलुओं से परे, मजबूत आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंधों को बढ़ावा देता है, एक व्यापक और लचीली रणनीतिक साझेदारी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करता है।

हालिया सहयोग

• **पिछली बैठक:** इमैनुएल मैक्रॉन और नरेंद्र मोदी की मुलाकात जुलाई 2023 में बैस्टिल दिवस समारोह के दौरान पेरिस में हुई थी।

• **घरेलू दबाव**: दोनों नेताओं को आंतरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है - मैक्रॉन अपने राष्ट्रपति पद को पुनर्जीवित करना चाहते हैं, जबकि मोदी भारत की धर्मनिरपेक्षता के संबंध में आलोचना करते हैं।

• **स्थापित रूपरेखा**: "क्षितिज 2047," विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के लिए एक व्यापक योजना, जुलाई में शुरू की गई थी।

मुख्य चर्चा बिंदु:

• **मौजूदा सौदों पर प्रगति:**

◦ **राफेल समुद्री विमान और स्कॉर्पीन पनडुब्बियां:** भारत के लिए 26 राफेल समुद्री विमान खरीदने और तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बियां बनाने के लिए एक सैद्धांतिक समझौता मौजूद है। हालाँकि, पिछले छह महीनों में हुई ठोस प्रगति अस्पष्ट बनी हुई है।

◦ **जेट इंजन प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** जेट इंजन प्रौद्योगिकी को भारत में स्थानांतरित करने पर प्रगति हुई है या नहीं यह अनिश्चित है।

• **क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में बदलाव:**

◦ **रुका हुआ यूक्रेनी जवाबी हमला:** रूस के खिलाफ यूक्रेन का जवाबी हमला रुक गया है, जिससे यूरोप में युद्ध और शांति के बारे में बहस फिर से शुरू हो गई है।

◦ **मध्य पूर्व में तनाव बढ़ रहा है:** इज़राइल पर हमास के हमलों और लाल सागर के नौवहन पर हौथिस के हमलों ने व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष के खतरे को बढ़ा दिया है।

◦ **संभावित ट्रम्प वापसी और इसके निहितार्थ:** व्हाइट हाउस में डोनाल्ड ट्रम्प की संभावित वापसी नए सिरे से राजनीतिक अराजकता और अमेरिकी विदेश नीति में बदलाव के बारे में चिंता पैदा करती है।

• **भारत और फ्रांस के लिए चुनौतियाँ:**

◦ **अमेरिका की नई गतिशीलता को अपनाना:** दोनों देशों को ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल के तहत वैश्विक मामलों में संभावित रूप से कम हुई अमेरिकी भूमिका के साथ तालमेल बिठाने की जरूरत है।

◦ **ट्रम्प की नीतियों के परिणामों का प्रबंधन:** भारत और फ्रांस को ट्रम्प की क्षेत्रीय और वैश्विक नीतियों के जटिल प्रभावों से निपटना होगा।

विदेश नीति की अवधारणाओं को फिर से परिभाषित करना: अमेरिकी छंटनी के आलोक में "**बहुध्रुवीयता**" और "**रणनीतिक स्वायत्तता"** की अवधारणाओं को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता हो सकती है।

• **मोदी और मैक्रॉन का फोकस:**

• **नारों से ध्यान हटाकर वास्तविक मुद्दों पर केंद्रित करना**: नेताओं को बड़ी-बड़ी घोषणाओं से आगे बढ़ना चाहिए और गंभीर चिंताओं का समाधान करना चाहिए जैसे:

◦ **यूरोप को स्थिर करना**: यूक्रेन में शांतिपूर्ण समाधान में योगदान देना और मध्य यूरोप में एक स्थिर सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करना।

◦ **यूरोपीय सुरक्षा को बढ़ावा देना**: यूरोपीय सुरक्षा को मजबूत करने में भारत की संभावित भूमिका की खोज करना।

◦ **भारत की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करना**: एशिया में संभावित संघर्षों को रोकने के लिए भारत की क्षमताओं को बढ़ाने में फ्रांस महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

◦ **महत्वपूर्ण शिपिंग लेन की सुरक्षा**: यदि अमेरिका अपनी भागीदारी कम कर देता है तो दोनों देशों को पश्चिम एशिया में महत्वपूर्ण शिपिंग लेन को सुरक्षित करने के लिए रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

बदलते वैश्विक परिदृश्य की मांग है कि भारत और फ्रांस राजनयिक यात्राओं से जुड़ी पारंपरिक धूमधाम से आगे बढ़ें। इसके बजाय, उन्हें ठोस कार्रवाइयों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो मौजूदा संकटों का समाधान करें और संभावित अमेरिकी छंटनी की स्थिति में यूरेशिया और इसके महत्वपूर्ण जलमार्गों को स्थिर करने के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करें।

आय में बढ़ते अंतर का विश्लेषण

यह लेख भारत में आय असमानता में गिरावट की सरल कथा को चुनौती देता है, विशेष रूप से स्व-रोज़गार श्रमिकों के बीच असमान कमी और आय ध्रुवीकरण के अंतर्निहित रुझानों को प्रकट करने के लिए पीएलएफएस डेटा का उपयोग करता है।

कार्यप्रणाली:

• पीएलएफएस के 2017-18 और 2022-23 दौर के डेटा का विश्लेषण करता है, रोजगार की प्रकृति (स्वरोजगार, नियमित वेतन, आकस्मिक वेतन) द्वारा आय असमानता को अलग करता है।

• गिनी गुणांक (कुल असमानता) और 90/10 अनुपात (आय ध्रुवीकरण) दोनों में परिवर्तन की जांच करता है।

• निचले 10% कमाने वालों के लिए असमानता को पकड़ने में करदाता डेटा (एसबीआई रिपोर्ट) की सीमाओं को स्वीकार करता है।

मुख्य निष्कर्ष:

समग्र असमानता:

- सभी आय अर्जित करने वालों में गिनी गुणांक में थोड़ी कमी (0.4297 से 0.4197)।
- असमान रुझान: वेतनभोगी श्रमिकों के लिए गिरावट, स्व-रोज़गार के लिए मामूली वृद्धि।

• **आय ध्रुवीकरण:**

- शीर्ष 10% आय अर्जक निचले 30% की तुलना में तेज़ वृद्धि का अनुभव कर रहे हैं।
- 90/10 अनुपात का बढ़ना, विशेष रूप से स्व-रोजगार वाले लोगों के बीच (6.7 से 6.9 तक वृद्धि)।

• **स्व-रोज़गार की भूमिका:**

- स्व-रोज़गार विरोधाभास: जबकि वेतन अर्जक असमानता में कमी देखते हैं, स्व-रोज़गार खंड एक प्रति-सहज ज्ञान युक्त कथा प्रस्तुत करता है। इस समूह के बीच 90/10 अनुपात में चिंताजनक वृद्धि इसके रैंकों के भीतर बढ़ती असमानता की ओर इशारा करती है। कम वेतन वाले, अंशकालिक स्व-रोजगार में वृद्धि, विशेष रूप से महिलाओं के बीच, संभावित रूप से इस आंतरिक विचलन को बढ़ावा देती है, जिससे अंतर्निहित संरचनात्मक कारकों की और जांच की मांग होती है।

Table 1: Gini coefficients

	2017-18	2022-23
Overall	0.4297	0.4197
Self-employed	0.37077	0.3765
Regular wage workers	0.43947	0.43198
Casual wage workers	0.27619	0.263

Table 2: The 90/10 ratio

	2017-18	2022-23
Overall	6.667	6.94
Self-employed	6	8.33
Regular wage workers	8.75	7.25
Casual wage workers	4	3.56

आशय:

• **नीति प्राथमिकता:** असमान गिरावट और बढ़ता ध्रुवीकरण नीति प्राथमिकताओं के पुनर्गणना की मांग करता है। हस्तक्षेपों को विशेष रूप से स्व-रोज़गार असमानता को बढ़ाने वाले कारकों को लक्षित करना चाहिए: औपचारिक रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना, कौशल विकास को बढ़ाना, और कम वेतन वाले स्व-रोज़गार के लिंग आधारित आयामों को संबोधित करना।

• **समग्र मापों से परे:** गिनी गुणांक जैसे समग्र मापों की सीमाएं उजागर की गई हैं। नीति निर्माताओं को व्यापक विश्लेषण को अपनाना चाहिए जो आर्थिक असमानता का खामियाजा भुगत रहे विशिष्ट समूहों पर लक्षित प्रभावी हस्तक्षेप तैयार करने के लिए रोजगार के प्रकार, आय स्तर और लिंग के आधार पर असमानता को अलग करता है।

• **चक्र को तोड़ना**: कम वेतन वाले स्व-रोज़गार को कायम रखना व्यक्तियों और परिवारों को आर्थिक असुरक्षा के चक्र में फँसा सकता है। सामाजिक सुरक्षा जाल में निवेश करना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच को बढ़ावा देना और पर्याप्त सहायता सेवाओं के साथ उद्यमिता को बढ़ावा देना इस चक्र को तोड़ने और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष:

यह विश्लेषण भारत में समान रूप से घटते आय अंतर की धारणा को खारिज करता है। अंतर्निहित रुझानों से असमानता में असमान कमी और विशेष रूप से स्व-रोज़गार श्रमिकों के बीच आय ध्रुवीकरण में चिंताजनक वृद्धि का पता चलता है। ध्रुवीकरण के चालकों को संबोधित करने और अधिक न्यायसंगत आय वितरण को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप और आगे के शोध की आवश्यकता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

भौतिक विज्ञानी पल्सर की गड़बड़ी के रहस्य को कैसे समझ रहे हैं

- 🔭 पल्सर की खोज:
  - 1967 में, कैंब्रिज विश्वविद्यालय के खगोलविदों, जिनमें जॉक्लिन बेल बर्नेल और एंटनी हेविश शामिल थे, ने पहले पल्सर की खोज की, जिसका नाम PSR B1919+21 रखा गया।
  - पल्सर घूम रहे न्यूट्रॉन तारे हैं जो समय-समय पर रेडियो सिग्नल उत्सर्जित करते हैं।
- ⭐ न्यूट्रॉन सितारे और गड़बड़ियाँ:
  - न्यूट्रॉन तारे भारी तारा कोर के ढहने से बनते हैं, जिससे ठोस क्रस्ट और सुपरफ्लुइड कोर के साथ सुपर-सघन वस्तुएं बनती हैं।
  - पल्सर में देखी गई गड़बड़ियों में रोटेशन दर में अचानक और संक्षिप्त वृद्धि शामिल है, जिससे भौतिकविदों को इस घटना की व्याख्या करना चुनौतीपूर्ण हो गया है।
- 🌌 सुपरफ्लुइड डायनेमिक्स:
  - पल्सर की गड़बड़ियां न्यूट्रॉन सितारों के अंदर अतितरलता की उपस्थिति का संकेत देती

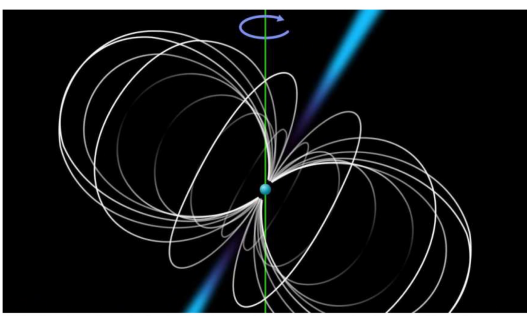

Grand puzzle: A schematic diagram of a pulsar. The sphere at the centre is the neutron star, the curves indicate the magnetic field lines, and the two cones show the emitted radiation. The green line is the pulsar's axis of rotation. MYSID (CC BY-SA 3.0)

- ⚙️ गड़बड़ी तंत्र:
  - न्यूट्रॉन स्टार क्रस्ट में सुपरफ्लुइड के साथ लोहे जैसे नाभिक की एक जाली होती है।
  - सुपरफ्लुइड में पिन किए गए भंवर, कोणीय गति के नुकसान से प्रभावित होकर, गड़बड़ी पैदा करते हैं क्योंकि वे पिनिंग पर काबू पाते हैं और बाहर की ओर बढ़ते हैं।
- 🔄 कोणीय संवेग स्थानांतरण:
  - एक गड़बड़ी के दौरान, सुपरफ्लुइड द्वारा खोए गए कोणीय गति को क्रस्ट द्वारा प्राप्त किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप रोटेशन दर में थोड़ी वृद्धि होती है, जो पल्सर टाइमिंग डेटा में परिलक्षित होती है।
- विवादित विवरण और वैज्ञानिक पूछताछ:
  - गड़बड़ तंत्र की विशिष्टताएं, अंतरिक्ष में ट्रिगर और समय के साथ विकास वैज्ञानिक बहस का विषय हैं।
  - पल्सर गड़बड़ियाँ वैज्ञानिक जांच के लिए एक समृद्ध क्षेत्र प्रदान करती हैं, जो न्यूट्रॉन सितारों के भीतर जटिल भौतिकी में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

प्रत्यक्ष कर-जीडीपी अनुपात ऊंचे स्तर पर, संग्रहण लागत कम

- 💰 प्रत्यक्ष कर-से-जीडीपी अनुपात:
  - केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) द्वारा जारी विस्तृत आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2013 के अंत में 6.11% के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया।
- 📊 प्रत्यक्ष कर के घटक:
  - व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) और कॉर्पोरेट आयकर (सीआईटी) से मिलकर बनता है।
- 📈 ऐतिहासिक तुलना:
  - सबसे अधिक प्रत्यक्ष कर-से-जीडीपी अनुपात 2007-08 में 6.3% था।

पिछले 22 वित्तीय वर्षों में यह तीसरी बार है जब अनुपात छह प्रतिशत के स्तर को पार कर गया है।

- 📉 कर-से-जीडीपी अनुपात महत्व:
  - कुल कर राजस्व को सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में दर्शाता है, जो करों के माध्यम से एकत्र किए गए देश के उत्पादन में सरकार की हिस्सेदारी को दर्शाता है।
  - यह इस बात का माप है कि सरकार किस हद तक अर्थव्यवस्था के संसाधनों को नियंत्रित करती है।
- 💵 शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह:
  - FY14 और FY23 के बीच, शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 160% से अधिक बढ़कर FY23 में ₹16.64 लाख करोड़ हो गया।
  - प्रत्यक्ष कर-से-जीडीपी अनुपात में वृद्धि, लगभग 140% की नाममात्र जीडीपी वृद्धि के कारण विकास हुआ।

Numbers that cheer

	Direct tax to GDP ratio		Cost of direct tax collection		
FY	Tax- GDP ratio (in %)	Buoyancy factor	Collection (in ₹ cr)	Expenditure (in ₹ cr)	Cost of collection (in %)
2014-15	5.55	0.86	6,95,792	4,101	0.59
2015-16	5.47	0.80	7,41,945	4,593	0.61
2016-17	5.53	1.10	8,49,713	5,578	0.66
2017-18	5.86	1.59	10,02,738	6,087	0.61
2018-19	6.02	1.29	11,37,718	7,074	0.62
2019-20	5.23	-1.21	10,50,681	6,952	0.66
2020-21	4.78	NA	9,47,176	7,223	0.76
2021-22	5.97	2.52	14,12,422	7,479	0.53
2022-23	6.11	1.18	16,63,686	8,452	0.51

Source: CBDT

- 📄 आयकर रिटर्न (आईटीआर) रुझान:
  - वित्त वर्ष 2013 में दाखिल कुल आईटीआर 7.78 करोड़ था, जो वित्त वर्ष 2014 की तुलना में 104% से अधिक की वृद्धि दर्शाता है।
  - चालू वित्त वर्ष में रिटर्न की संख्या पहले ही 8 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है.
- 📉 संग्रह दक्षता की लागत:
  - वित्त वर्ष 2024 में 0.57% की तुलना में वित्त वर्ष 23 में घटकर 0.51% हो गया, जो लागत प्रभावी संग्रह के लिए बेहतर कर प्रशासन और प्रौद्योगिकी के उपयोग को दर्शाता है।
- 📈 वर्तमान वित्तीय प्रदर्शन:
  - नवीनतम डेटा ₹14.70 लाख करोड़ के प्रत्यक्ष कर संग्रह को प्रोत्साहित करने का संकेत देता है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 19.4% अधिक है।
  - FY24 के लिए प्रत्यक्ष करों के कुल बजट अनुमान का 80.6% प्रतिनिधित्व करता है, जो पूरे वित्तीय वर्ष के लिए बजट अनुमानों की संभावित अधिकता का सुझाव देता है।

डब्ल्यूटीओ में 'साफ़' समाधान के लिए, भारत सार्वजनिक स्टॉक से निर्यात न करने का वादा कर सकता है

- 🌾 विश्व व्यापार संगठन खाद्य सुरक्षा गतिरोध:
  - भारत को डब्ल्यूटीओ में खाद्य सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग (पीएसएच) के मुद्दे पर गतिरोध का सामना करना पड़ रहा है।
- 🔄 जीटीआरआई का सुझाया गया समाधान:
  - जीटीआरआई का प्रस्ताव है कि भारत अपने पीएसएच स्टॉक से चावल का व्यावसायिक निर्यात न करने का वादा करके गतिरोध को तोड़ सकता है।
- 🌍 व्यापार साझेदारों की चिंताएँ:
  - अमेरिका और अन्य लोगों का तर्क है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के माध्यम से भारत के उच्च मूल्य समर्थन ने इसे सबसे बड़े चावल निर्यातक के रूप में दर्जा दिया है।
- 🛡️ स्वच्छ, स्थायी समाधान:
  - पीएसएच स्टॉक से चावल निर्यात न करने की प्रतिबद्धता के बदले में, भारत सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग मुद्दे का एक स्वच्छ, स्थायी समाधान चाहता है।
- 💰 आर्थिक लचीलापन तर्क:
  - पेपर में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि चूंकि चावल का उत्पादन पानी की खपत वाला और महंगा है, इसलिए अगर चावल का निर्यात घटता है तो भारत को आर्थिक रूप से नुकसान नहीं होगा।

- 🌱 विकासशील देशों का स्थायी समाधान का आह्वान:
  - भारत सहित जी33, एसीपी और अफ्रीकी समूह जैसे समूहों के सदस्य कृषि समझौते में प्रतिबंधों के कारण सार्वजनिक स्टॉक होल्डिंग के स्थायी समाधान की वकालत करते हैं।
- 🕊️ शांति खंड और दीर्घकालिक समाधान:
  - 2013 के बाली मंत्रिस्तरीय निर्णय ने विकासशील देशों को अस्थायी रूप से सब्सिडी सीमा का उल्लंघन करने की अनुमति देने वाला एक शांति खंड प्रदान किया। हालाँकि, भारत और अन्य लोग डब्ल्यूटीओ नियमों में निहित स्थायी समाधान चाहते हैं।
- 📦 ब्लू बॉक्स सब्सिडी समायोजन:
  - जीटीआरआई का सुझाव है कि भारत सहायता कार्यक्रमों को 'ब्लू बॉक्स' सब्सिडी के अंतर्गत वर्गीकृत करे, जिसमें कोई खर्च सीमा नहीं है लेकिन आउटपुट के 75% तक समर्थन को सीमित करना शामिल है।
- 🌾 रणनीतिक कृषि नीति समायोजन:
  - नोट में प्रस्तावित है कि भारत 'ब्लू बॉक्स' सब्सिडी के तहत विशिष्ट फसलों के लिए उच्च उत्पादन लक्ष्य निर्धारित करता है, उत्पादन को सीमित करके लेकिन महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करके संभावित प्रतिरोध पर काबू पाता है।

छत पर सौर ऊर्जा योजना

- ☀️ भारत की छत सौर योजना:
  - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1 करोड़ घरों पर रूफटॉप सोलर सिस्टम लगाने के लिए प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना की घोषणा की.
  - ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हुए गरीबों और मध्यम वर्ग के लिए बिजली बिल कम करना है।
- 🎯 सौर लक्ष्यों की वर्तमान स्थिति:
  - भारत का 2022 तक 100 गीगावॉट सौर ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य चूक गया है, कुल क्षमता 73.3 गीगावॉट तक पहुंच गई है।
  - ग्रिड से जुड़े रूफटॉप सोलर, 40 गीगावॉट लक्ष्य का हिस्सा, ने लगभग 11 गीगावॉट का योगदान दिया।
- 📉 कोविड-19 का प्रभाव और संशोधित लक्ष्य:
  -कोविड-19 महामारी ने सौर विकास को बाधित किया, जिससे लक्ष्य प्राप्त करने में कमी आई।
  - 40 गीगावॉट रूफटॉप सोलर सिस्टम का नया लक्ष्य अब 2026 निर्धारित किया गया है।
- 🏠 प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना फोकस:
  - स्थापित क्षमता से हटकर विशिष्ट संख्या में घरों, मुख्य रूप से अप्रयुक्त आवासीय भवनों को लक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

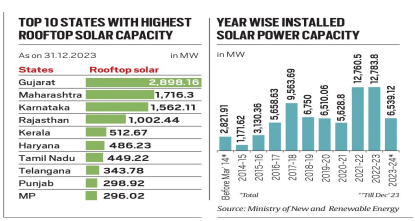

- 🌐 क्षमता और दायरा:
  - भारत में लगभग 25 करोड़ घरों में छतों पर 637 गीगावॉट सौर ऊर्जा लगाने की क्षमता है, इस क्षमता का लगभग पांचवां हिस्सा व्यवहार्य माना जाता है।
- 🌍 ऊर्जा उद्देश्य:
  - ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने, गैर-जीवाश्म ऊर्जा में परिवर्तन और ऊर्जा पहुंच बढ़ाने जैसे उद्देश्यों के साथ संरेखित।
  - 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित स्रोतों से 50% बिजली उत्पादन प्राप्त करने की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता।
- 💡 चुनौतियाँ और आवश्यक हस्तक्षेप:
  - वित्तीय प्रोत्साहन आवश्यक हैं, लेकिन एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए अतिरिक्त उपायों की आवश्यकता है।
  - वितरण कंपनियों पर वित्तीय बोझ डाले बिना उन्हें सशक्त बनाना कार्यक्रम की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
- 📈 नवीकरणीय ऊर्जा के लिए तीव्र विकास:
  - कुल स्थापित क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा का योगदान लगभग 30% है, बढ़ती बिजली की मांग को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा में तेजी से वृद्धि महत्वपूर्ण है।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org